जो लोग गिरने से डरते हैं वह कभी भी जीवन में उड़ान नहीं भर सकते।

तेवर वही, अंदाज नया .....!
साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

डाक रजिस्ट्रेशन नं. मालवा डिवीजन-
L2/65/RNP/397/2024-2026

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 28 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 09-04-2024 से 15-04-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

कश्मीर हमारा सिरताज है कि नहीं है, आर्टिकल 370 का जिक्र कर कांग्रेस पर खूब बरसे पीएम मोदी

चंद्रपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महाराष्ट्र के चंद्रपुर में चुनावी जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। पीएम मोदी ने कहा, कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि मोदी देश में जहां भी जाते हैं, वहां कश्मीर में धारा 370 के बारे में क्यों बात करते हैं? आप मुझे बताइए कि क्या यह कांग्रेस की विभाजनकारी सोच नहीं है? कश्मीर हमारा है कि नहीं है? पूरे हिन्दुस्तान का है कि नहीं है? हमारा सिरताज है कि नहीं है? क्या कश्मीर के लिए ये भाषा हमें मंजूर है? उन्होंने कहा कि जब छत्रपति शिवाजी महाराज ने दिल्ली सल्तनत से मोर्चा लिया था तब क्या उन्होंने यह कहा कि दिल्ली में जो भी हो, उससे मेरा क्या वास्ता? क्या लोकमान्य तिलक कभी यह सोच सकते थे कि पंजाब में जलियावाला बाग हत्याकांड हो तो उससे महाराष्ट्र का क्या वास्ता। वे कभी ऐसा नहीं सोचते।

पीएम मोदी ने कहा कि जब कश्मीर आतंक की आग में सुलझ रहा था, जब कश्मीरी पंडितों के घर जलाए जा रहे थे, तब स्वर्गीय बालासाहेब ठाकरे खुलकर कांग्रेस के खिलाफ आ गए थे। बालासाहेब ठाकरे ने यह नहीं सोचा कि कश्मीर में आग लगी है तो इससे महाराष्ट्र के लोगों का क्या लेना-देना है। उन्होंने कहा कि एकनाथ शिंदे और उनकी पार्टी बाला साहेब के विचारों को मजबूती से आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा, 2024 का लोकसभा चुनाव स्थिरता बनाम अस्थिरता के बीच का चुनाव है। एक ओर बीजेपी-NDA है जिसका ध्येय है देश के लिए कड़े फैसले लो और बड़े फैसले लो। दूसरी ओर कांग्रेस और INDI गठबंधन है जिसका मंत्र है कि जहां भी सत्ता पाओ खूब मलाई खाओ।

कांग्रेस पार्टी खुद ही समस्याओं की जननी-पीएम मोदी

नरेंद्र मोदी ने कहा कि INDI गठबंधन ने हमेशा देश को अस्थिरता में झोंका है। INDI गठबंधन की जब तक केंद्र में सरकार रही तब महाराष्ट्र की लगातार उपेक्षा होती रही। राजनीतिक पार्टियों का दायित्व होता है कि वो जनता की समस्याओं का समाधान करे, लेकिन कांग्रेस पार्टी खुद ही समस्याओं की जननी है। पीएम मोदी ने कहा, जब नीयत सही होती है तो नतीजे भी सही होती है। आज देश का दलित, पिछड़ा, आदिवासी और गरीब मोदी सरकार को अपनी सरकार मानता है। मोदी किसी शाही परिवार में पैदा होकर प्रधानमंत्री नहीं बना। मोदी एक गरीब परिवार में जन्म लेकर, आपके बीच रहकर, यहां तक आया है।

हमने बड़ी-बड़ी समस्याओं का किया स्थायी इलाज

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पिछले 10 वर्षों से कांग्रेस सत्ता से बाहर है। आपने **NDA** को पूर्ण बहुमत दिया। हमने देश की बड़ी-बड़ी समस्याओं का स्थायी इलाज किया है। प्रधानमंत्री ने कहा, कांग्रेस के सांसद भारत के एक और विभाजन की बात कर रहे हैं। इंडी अलायंस के लोग दक्षिण भारत को अलग करने की धमकी दे रहे हैं। इंडी अलायंस में शामिल DMK पार्टी सनातन को डेंगू-मलेरिया कह कर उसके खात्मे की बात कर रही और नकली शिवसेना वाले उन्हीं लोगों को महाराष्ट्र में रैली करवाते हैं। उन्होंने कहा किचंद्रपुर से इतना स्नेह मिलना मेरे लिए बहुत विशेष है। एक चंद्रपुर ही है जिसने अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण के लिए लकड़ी भेजी। संसद की नई इमारत में भी चंद्रपुर की लकड़ी लगी है।

पहले पटवारी कलेक्टर का बाप बन जाता था, हमने व्यवस्था ही बदल दी मुख्यमंत्री-डॉ. मोहन यादव

राजगढ़। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव विधानसभा स्तरीय चुनावी कार्यकर्ता सम्मेलन में शामिल होने के लिए राजगढ़ पहुंचे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते हुए केंद्र और मध्यप्रदेश शासन की योजना का बखान किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि किसी कारण से जमीन खरीदना बेचना या नामातंरण करना होता था तो पहले पटवारी के चक्कर पर चक्कर लगाना पड़ते थे। पटवारी कलेक्टर का बाप बन जाता है। हाथ नहीं आता था। हमने व्यवस्था बदल दी। अब रजिस्ट्री के साथ ही नामांतरण ऑनलाइन हो जाया करेंगे। पटवारी का रोल ही खत्म कर दिया। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव दिग्विजय सिंह पर भी जमकर बरसे।

उन्होनें दिग्विजय सिंह पर तंज कसते हुए कहा कि लोग राजगढ़ से नेता तो बन गए। सांसद बन गए, बड़े पद पर पहुंच गए, लेकिन कांग्रेस के

लोगों ने सदैव राजगढ़ को कुचलने का प्रयास किया, दबाने का प्रयास किया, डराने का प्रयास किया। ये सारा पाप सौतेला व्यवहार, सही शब्द बोला किसी ने राजगढ़ की धरती इस बात के लिए नहीं बनी थी। राजगढ़ में तो दिल खोल करके आपको आशीर्वाद दिया था, लेकिन राजगढ़ के अंदर ये कुंडालिया बांध, ये मोहनपुरा बांध, ये मेडिकल कॉलेज, ये पहले क्यों नहीं आ सकते थे, जब आपकी सरकार थी। यह पाप अगर किसी के माथे पर है तो उनके माथे पर है, जो फिर से आपके बीच हाथ जोड़कर आ गए, बड़े दुर्भाग्य के साथ के कहना पढ़ रहा है, ये जनता माफ करेगी क्या आपको, सबको मालूम है, सबको जानकारी है।

चंदा दिया था तो वापस ले लो

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने दिग्विजय सिंह का नाम लिए बिना ही कहा कि राम मंदिर के मामले में इन्होंने क्या-क्या नहीं बोला था। अब कह रहे हैं कि हमने भी चंदा दिया था, अरे चंदा दिया था तो चंदा वापस ले लो भाई, हमारे भगवान राम इस लायक नहीं है कि तुम्हारे जैसे लोगों का चंदा भी रखें। सारे ट्रस्ट को मालूम है, भगवान राम का धूमधाम से सुप्रीम कोर्ट के बाद अगर लोकार्पण का मौका आया, आपने और आपकी पार्टी ने क्या कहा था, बोलने की जरूरत नहीं है। निमंत्रण भी ठुकराया, अरे भगवान के मंदिर का निमंत्रण हमारे घर पर कोई दुश्मन भी निमंत्रण देता है, तो उसके मुंह पर तो चुप रहना पड़ता है। लेकिन आपकी पार्टी का तो ऐसा अहंकार है कि जैसे भगवान राम के मामले में वो कुछ भी कर देगी तो दूसरे लोग बर्दाश्त करेंगे। मुझे इस बात की प्रसन्नता है। हिंदू मुस्लिम को इस मुद्दे पर कांग्रेस ने बहुत लड़वाया था।

सम्पादकीय

आपत्तिजनक टिप्पणी अशोभनीय

संसद में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करने संबंधी नारी शक्ति वंदन अधिनियम पिछले मानसून सत्र में पारित हो गया। हालांकि यह कानूनी प्रावधान अगले लोकसभा चुनाव से प्रभावी होगा, पर लंबे समय से रुकी पड़ी इस मांग के पूरा हो जाने से इसलिए महिलाओं में उत्साह है कि राजनीति में उनकी उपस्थिति बढ़ेगी और वे व्यवस्था संबंधी महत्त्वपूर्ण निर्णयों में सहभागिता कर सकेंगी। मगर महिलाओं को लेकर खुद राजनेताओं में जैसा संकुचित दृष्टिकोण देखा जाता है, उससे संदेह होता है कि उन्हें वास्तव में कितनी शक्ति और कितना सम्मान मिल पाएगा। चुनावी गहमागहमी में राजनेता अक्सर प्रतिद्वंद्वी नेताओं पर व्यक्तिगत टिप्पणी करने से भी परहेज नहीं करते। वे भूल जाते हैं कि किसी महिला के बारे में अशोभन टिप्पणी करने से बचना चाहिए। ममता बनर्जी, हेमा मालिनी और कंगना रनौत पर की गई टिप्पणियां इसका ताजा उदाहरण हैं।

इसके पहले भी कई चुनाव अभियानों के दौरान विभिन्न पार्टियों के जिम्मेदार माने जाने वाले नेताओं की तरफ से प्रतिद्वंद्वी पार्टी की महिला उम्मीदवारों और नेताओं पर की गई आपत्तिजनक टिप्पणियों और लहजों को याद किया जा सकता है। चुनाव के अलावा, सामान्य अवसरों पर भी, महिला नेताओं के खिलाफ कई बार अशोभन वक्तव्य सुने गए हैं। लोकतंत्र में राजनेता अपने प्रतिद्वंद्वी पर तीखी टिप्पणियां कर सकते हैं, मगर इसका यह अर्थ नहीं कि लोकतंत्र की मर्यादा को ताक पर रख दिया जाए। राजनीति में सार्वजनिक वक्तव्यों का महत्त्व होता है। अगर कोई बड़ा नेता अपने किसी प्रतिद्वंद्वी के बारे में टिप्पणी करता है, तो निचली कतार के नेता उसे आगे बढ़ाते हैं। इसलिए उनसे न केवल शब्दों के चुनाव, बल्कि लहजे पर लगाम की भी अपेक्षा की जाती है। राजनीति में भाषा एक बड़ा औजार होता है। अगर उसे ठीक से बरतना न आए, तो कई बार खुद को भी जख्मी कर लेने का खतरा रहता है। किसी महिला के प्रति अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल तो यह भी जाहिर करता है कि टिप्पणी करने वाले का महिला समाज के प्रति दृष्टिकोण क्या है। संसद में महिला आरक्षण को लेकर चली बहसों के समय की कुछ टिप्पणियों की गूंज आज तक इसीलिए बनी हुई है कि उनसे पूरे महिला समाज के सम्मान पर प्रश्नचिह्न लगा था। राजनीतिक दलों की अगली कतार में सामान्य महिलाओं की उपस्थिति वैसे भी न के बराबर है। ऐसे में महिलाओं के प्रति दुराग्रहपूर्ण टिप्पणियां इस विडंबना को और गहरा करती हैं।

यह भी चिंता का विषय है कि आखिर राजनीति में भाषा की मर्यादा इतनी धुंधली क्यों होती जा रही है कि राजनेता संसद और विधानसभाओं से लेकर सार्वजनिक मंचों तक पर बेलगाम कुछ भी बोलने में संकोच नहीं करते। महिलाओं के प्रति हमारे पुरुष प्रधान समाज का नजरिया किसी से छिपा नहीं है। मगर जिन पर समाज और व्यवस्था की विसंगतियां दूर करने की जिम्मेदारी है, अगर वे भी उसी संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त हों, तो महिला शक्ति और उसके सम्मान की आकांक्षा भला कहां तक पूरी हो पाएगी। शीर्ष नेतृत्व की संकीर्णता और दुराग्रह छन कर नीचे तक पहुंचते हैं। हर राजनीतिक दल महिलाओं को बराबरी का हक दिलाने का दम भरता देखा जाता है, सत्ता में आने पर महिला सुरक्षा के दावे करता भी नहीं थकता, मगर जब तक खुद राजनेताओं के मन में महिलाओं के प्रति सम्मान पैदा नहीं होगा, तब तक उन्हें शक्ति दिला पाना संभव नहीं होगा।

कांग्रेस जनता के बीच अनुच्छेद 370 को लेकर भ्रम पैदा करने का काम करती है

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की जम्मू-कश्मीर से जुड़े अनुच्छेद 370 पर की गई टिप्पणी के बाद लगता है कि कांग्रेस इस विषय को लेकर सदैव विवाद की स्थिति बनाए रखना चाहती है। जब सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच जजों की बेंच ने सर्वसम्मति से जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 को हटाना वैध माना है, तब बार-बार इसे लेकर कांग्रेस क्यों बचकाने बयान दे रही है, जो विवाद का कारण बन रहे हैं।

देखा जाए तो यह भारत के आम नागरिकों के बीच विभेद पैदा करने वाला अनुच्छेद था, जिसे समाप्त किए जाने की मांग इसके लागू हुए समय से लगातार की जा रही थी। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी से लेकर अनेक देशभक्तों ने इसकी समाप्ति के लिए अपना बलिदान किया है। यह बहुत ही दुखद है कि कांग्रेस किसी न किसी बहाने से तुष्टिकरण की राजनीति में लगी रहना चाहती है। कांग्रेस के कई नेताओं को लगता है कि भारत का मुसलमान 370 के पक्ष में है, ऐसे में यदि कांग्रेस भी यहां आर्टिकल 370 के बने रहने का समर्थन करती है तो उसे मुस्लिम तुष्टिकरण के तहत फायदा पहुंचेगा। जब 370 कश्मीर से हटाया गया था तब घाटी में फारुख अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती और कई हुर्रियत नेताओं ने इसका विरोध किया था। लेकिन अब जब कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने इस विषय को फिर से उठाया है, तब इससे साफ जाहिर है कि वह इस मुद्दे के बहाने मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति कर रहे हैं।

वस्तुत- नए विवाद की शुरुआत होती है कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा राजस्थान में दिए गए भाषण के दौरान यह कहने से कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने से क्या फर्क पड़ता है। निश्चित ही कांग्रेस के अध्यक्ष का यह बयान संपूर्ण कांग्रेस की बौद्धिकता और संविधानिक योग्यताओं पर प्रश्न खड़े करता है। क्योंकि एक तरफ लोकसभा और विधानसभाओं में कांग्रेस के नेता संविधान और कानून पर लम्बे-लम्बे भाषण देते हैं और यह बताते हुए नहीं थकते कि किस नियम के हटने या जोड़ने से देश की जनता को लाभ कितना लाभ या हानि होती है। वहीं, दूसरी ओर कांग्रेस जनता के बीच अनुच्छेद 370 को लेकर भ्रम पैदा करने का काम करती है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे आज यह अच्छी तरह से समझें कि जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने से बहुत फर्क पड़ा है। इस एक अर्टिकल 370 की समाप्ति के कारण से ही देश में अनेक बदलाव देखने को मिले हैं। जैसे कि अब जम्मू-कश्मीर में देश के अन्य राज्यों के लोग भी जमीन ले रहे हैं, जबकि इससे पहले नहीं ले सकते थे। भारत का कोई भी नागरिक अब जम्मू-कश्मीर राज्य में नौकरी भी कर सकता है, वहां स्थायी तौर पर निवास कर सकता है। इससे पहले तक सिर्फ स्थानीय लोगों को ही नौकरी का अधिकार था। अन्य राज्यों से जम्मू-कश्मीर जाकर रहने वाले लोगों को भी वहां मतदान करने का अधिकार मिल गया है। अब अन्य राज्यों के लोग भी यहां से चुनाव लड़ सकते हैं। जम्मू-कश्मीर व लद्दाख में भी सुप्रीम कोर्ट का हर फैसला लागू होगा। पहले जनहित में दिए गए सुप्रीम कोर्ट के फैसले वहां लागू नहीं होते थे। क्या कांग्रेस को नहीं लगता कि यह सभी विषय देश भर के लोगों से जुड़े हुए हैं?

आज कश्मीर का अलग झंडा नहीं रहा, यहां तिरंगा शान से लहराता है। जम्मू-कश्मीर का अलग संविधान भी इतिहास बन गया है। जम्मू-कश्मीर में स्थानीय लोगों की दोहरी नागरिकता समाप्त हो गई है । आर्टिकल 370 की समाप्ति से सबसे बड़ी राहत महिलाओं पर पर्सनल कानून तभी बेअसर हो सका जब यह अनुच्छेद समाप्त हुआ। जम्मू-कश्मीर की लड़कियों को अब दूसरे राज्य के लोगों से भी शादी करने की स्वतंत्रता है। बहुतायत में जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख के लोग भी शिक्षा के अधिकार, सूचना के अधिकार जैसे भारत के हर कानून का लाभ उठा रहे हैं । केंद्र सरकार की कैग जैसी संस्था अब जम्मू-कश्मीर में भी भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए ऑडिट कर रही है, इससे यहां पर भ्रष्टाचार पर लगाम लगना शुरू हो गया है। आर्टिकल 370 हटाए जाने के बाद प्रधानमंत्री विकास पैकेज के अंतर्गत अभी तक हजारों कश्मीरी पंडित घाटी में वापस पहुंचे हैं। केंद्र सरकार के विकास पैकेज के माध्यम से लोगों को नौकरियां और रहने जैसी कई सुविधाएं दी जा रही हैं।

वास्तव में यह नरेन्द्र मोदी सरकार की दीर्घकालिक सोच का ही नतीजा है कि कश्मीर भी देश के साथ विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। चाइल्ड मैरिज एक्ट, शिक्षा का अधिकार और भूमि सुधार जैसे कानून अब यहां भी प्रभावी है। वाल्मीकि, दलित और गोरखा जो राज्य में दशकों से रह रहे हैं, उन्हें भी राज्य के अन्य निवासियों की तरह समान अधिकार मिल रहे हैं। (एक देश, एक विधान, एक निशान का सपना साकार अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री, संसद में बहस के दौरान दिया गया वक्तव्य, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब पिछले माह जम्मू-कश्मीर के प्रवास पर थे तब उन्होंने एक सभा में जो कहा, वही आज इस राज्य की सच्चाई है। उन्होंने कहा था, अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद, कश्मीर में सभी के लिए समान अधिकार और समान अवसर हैं। जम्मू-कश्मीर आज विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है क्योंकि वह खुलकर सांस ले रहा है।...दशकों तक, राजनीतिक लाभ के लिए, कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने 370 के नाम पर जम्मू-कश्मीर के लोगों को गुमराह किया और देश को गुमराह किया। जम्मू-कश्मीर के लोगों को अब यह सत्य पता चल गया है कि उन्हें गुमराह किया गया था। कुछ परिवारों के फायदे के लिए जम्मू-कश्मीर को जंजीरों में जकड़ कर रखा गया।...आज 370 नहीं है, इसलिए जम्मू-कश्मीर के युवाओं की प्रतिभा का पूरा सम्मान हो रहा है और उन्हें नए अवसर मिल रहे हैं। आज यहां सभी के लिए समान अधिकार और समान अवसर हैं।

लोकसभा में गृह मंत्रालय ने बताया भी है कि कैसे अनुच्छेद 370 के हटने के बाद जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं की संख्या में काफी कमी आई है। सड़कों का काम जो राज्य सरकारों के होने पर धीमी गति से हो रहा था अब उसमें तेजी साफ दिखाई देती है। बिजली गांवों तक पहुंच गई है। 370 हटने के बाद देश भर से वहां कंपनियां जा रही हैं, जिससे कश्मीरी लोगों के लिए रोजगार के अवसर बन रहे हैं। साथ ही वहां बन रहे प्रोडक्ट देश भर में और विदेशों में निर्यात किए जा रहा हैं। शिक्षा व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है। टूरिस्ट, जिस पर पूरा कश्मीर टिका हुआ है, 370 हटने के बाद उसमें भी काफी बढ़ोतरी हुई है, न सिर्फ भारत के अलग-अलग राज्यों से लोग यहां घूमने आ रहे हैं, बल्कि आज दुनिया के कई देशों के लोग जम्मू-कश्मीर की प्राकृतिक सुंदरता को देखने आ रहे हैं। कहना होगा कि केंद्र की मोदी सरकार के हाथों में जम्मू-कश्मीर राज्य की व्यवस्था आने के बाद से बहुत बड़े स्तर पर हर क्षेत्र में आज सुधार दिखाई देने लगा है और सुधार का यह क्रम निरंतर जारी है।

15 करोड़ की जमीन मुक्त करवा दी मुख्यमंत्री यादव ने

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में जमकर बुलडोजर गरजा। भोपाल में सीएम मोहन यादव प्रशासन ने बुलडोजर कार्रवाई करते हुए 0.7 हेक्टेयर जमीन को कब्जा मुक्त करवाया है। प्रशासन ने बताया कि इस जमीन पर अतिक्रमणकारियों ने कब्जा कर रखा था। कब्जा करने के बाद अतिक्रमणकारियों ने सरकारी जमीन पर निर्माण भी शुरू कर दिया था। इस जमीन की कीमत करोड़ों में बताई जा रही है।

मामला भोपाल के ग्राम पिपलिया पेंदे खा का है। यहां के 0.7 हेक्टेयर सरकारी जमीन पर भूमाफियाओं ने कब्जा कर रखा था। शनिवार सीएम मोहन यादव प्रशासन का अमला मौके पर पहुंचा और उसपर हुए निर्माण पर बुलडोजर चलाते हुए जमीन को कब्जा मुक्त करवा दिया। बताया जा रहा है कि

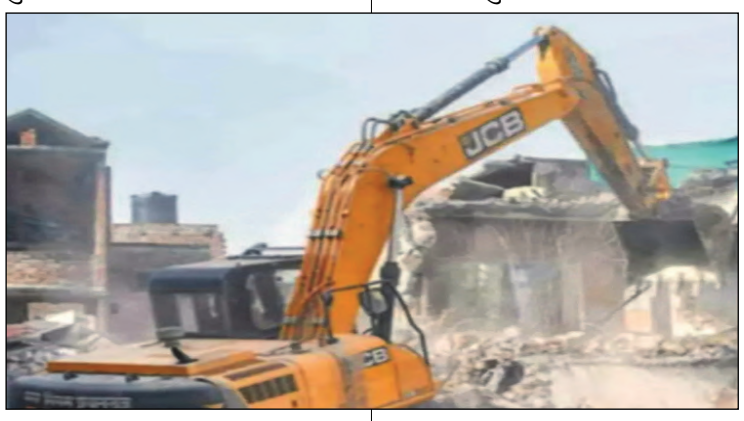

इस जमीन की कीमत 15 करोड़ 50 लाख रुपए है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, जिला प्रशासन के अमले ने तीन जेसीबी मशीनों के माध्यम से ग्राम पिपलिया पेंदे खा स्थित 0.700 हेक्टयर भूमि को अतिक्रमणकारियों के कब्जे से मुक्त कराया। यह शासकीय भूमि जिंसी चौरहा निवासी भैया भाई और शहजाद तथा पिपलिया पेंदे खां निवासी जहीर अहमद से मुक्त कराई गई है।

क्या कर रहे थे भूमाफिया?

मिली जानकारी के अनुसार, भोपाल के पिपलिया पेंदे खां में 0.7 हेक्टेयर सरकारी जमीन है। इस जमीन पर वहां के अतिक्रमणकारियों ने कब्जा कर करने के बाद भूमाफियाओं ने कॉलोनी निर्माण करना शुरू कर दिया था।

इस बात की जानकारी जब प्रशासन को मिली तो प्रशासन अमले के साथ पहुंच गया। इस दौरान प्रशासन ने वहां हुए निर्माण को तोड़ दिया और सरकारी जमीन को भूमाफियाओं से कब्जा मुक्त करवा ली है। इस गांव की यह सरकारी जमीन की काफी कीमती थी। इसपर बने हुए निर्माण पर प्रशासन का बुलडोजर चल चुका है।

राहुल गांधी के प्लेन का खत्म हुआ फ्यूल

शहडोल। चुनाव प्रचार के लिए मध्य प्रदेश पहुंचे कांग्रेस नेता राहुल गांधी को शहडोल जिले में रात्रि विश्राम करना पड़ा। उन्हें शहडोल में रैली को संबोधित करने के बाद जबलपुर के लिए रवाना होना था। लेकिन खराब

मौसम के कारण उनका हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर सका। पार्टी के एक नेता ने इसकी जानकारी दी। मगर बीजेपी का दावा इससे उलट है। पार्टी नेताओं का कहना है कि मौसम नहीं बल्कि फ्यूल (ईंधन) खत्म होने की वजह से राहुल के विमान ने उड़ान नहीं भरी। राहुल गांधी अपनी पार्टी के लोकसभा चुनाव प्रचार अभियान के लिए मध्य प्रदेश में हैं और उन्होंने सोमवार को मंडला और शहडोल में दो रैलियों को संबोधित किया, जहां 26 अप्रैल को मतदान होगा। मप्र कांग्रेस प्रमुख जीतू पटवारी ने पीटीआई को बताया, शहडोल में खराब मौसम के कारण उनका हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर सका। गांधी को जबलपुर जाना था, जहां से उन्हें दिल्ली के लिए रवाना होना था। हालांकि, बाद में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान समेत भाजपा नेताओं ने दावा किया कि हेलीकॉप्टर का ईंधन खत्म हो गया है। पटवारी ने बताया, 'अब वह शहडोल के एक होटल में रात में रुकेंगे और मंगलवार सुबह छह बजे रवाना होंगे।' इस बीच, रात छिंदवाड़ा लोकसभा सीट के अंतर्गत गांव चावलपानी में एक सभा को संबोधित करते हुए चौहान ने कहा, राहुल गांधी आज शहडोल आए लेकिन ईंधन की कमी के कारण उनका हेलीकॉप्टर उड़ान नहीं भर सका।

नीट की तैयारी कर रही छात्रा से दुष्कर्म, आरोपी सीएमओ गिरफ्तार

शहडोल। मध्यप्रदेश में नीट की तैयारी कर रही छात्रा से दुष्कर्म के आरोप में नगरपालिका सीएमओ को गिरफ्तार किया गया है। पीड़ित छात्रा ने 23 मार्च को इंदौर के एमआईजी थाने में आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज करवाया था।

पीड़िता ने आरोप लगाया था कि आरोपी ने शादी का झांसा देकर उसके साथ कई बार दुष्कर्म किया और इस दौरान जबलपुर समेत कई जगहों पर ले गया। छात्रा ने कहा कि जब वह शादी करने के लिए कहने लगी तो वह मुकर गया। छात्रा की शिकायत पर केस दर्ज होने के बाद पुलिस की 4 सदस्यीय टीम रविवार शहडोल जिले के धनपुरी पहुंची। जहां से टीम ने आरोपी सीएमओ प्रभात बरकड़े को गिरफ्तार किया। पुलिस मामले में अभी पूछताछ कर रही है।

इंदौर पुलिस ने रविवार को शहडोल की धनपुरी नगर पालिका के सीएमओ प्रभात बरकड़े को गिरफ्तार किया है। आरोपी प्रभात बरकड़े पिछले दो साल से धनपुरी नगर पालिका में मुख्य नगरपालिका अधिकारी के रूप में पदस्थ है।

इससे पहले शहडोल जिले की बकहो नगर परिषद में सीएमओ रह चुके हैं। प्रभात पर नीट की तैयारी कर रही छात्रा से दुष्कर्म का आरोप है। पीड़ित ने 23 मार्च को इंदौर के एमआईजी थाने में उनके खिलाफ मामला दर्ज करवाया था। खास बात यह है कि पुलिस जब आरोपी अधिकारी को गिरफ्तार करने पहुंची, उस वक्त वे धनपुरी के एक ग्राउंड में क्रिकेट खेल रहा था। पुलिस ने आरोपी को वहीं से गिरफ्तार किया और फिर इंदौर के लिए रवाना हो गई। बताया जा रहा है की पीड़ित छात्रा और आरोपी अधिकारी प्रभात वरकड़े बालाघाट के बैहर का रहने वाला है।

एमआईजी थाना प्रभारी मनीष लोधी ने बताया कि सीएमओ प्रभात बरकड़े पर रेप का ये मामला उस वक्त का है, जब वे इंदौर में रहकर पढ़ाई कर रहा था। 2021 में आरोपी की मुलाकात पीड़ित छात्रा से हुई थी। छात्रा की उम्र तब 16 साल थी। आरोपी सीएमओ और पीड़ित छात्रा के बीच दूर का रिश्ता भी होना पता चला है। पीड़ित की शिकायत पर इंदौर के एमआईजी थाना पुलिस ने आरोपी अफसर के खिलाफ केस दर्ज किया था।

पीड़ित ने पुलिस को अपनी शिकायत में बताया कि वह इंदौर में रहकर नीट की तैयारी कर रही थी। इस दौरान उसकी प्रभात बरकड़े से कई बार मुलाकात हुई।

पीड़िता ने आरोप लगाया कि प्रभात उसे इंदौर और जबलपुर समेत कई जगहों पर ले गया और शादी का झांसा देकर कई बार रेप किया। जब वह प्रभात पर शादी करने के लिए कहने लगी तो वह मुकर गया।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस को एक और झटका, 2 दिन में बड़े नेताओं ने छोड़ी पाटी, भाजपा में शामिल

ग्वालियर। चंबल अंचल में कांग्रेस पार्टी लगातार टूटती नजर आ रही है। सोमवार को मुरैना की सुमावली विधानसभा से कांग्रेस पूर्व विधायक अजब सिंह कुशवाह ने पार्टी छोड़ दी थी। आज शिवपुरी के करैरा विधानसभा से कांग्रेस के पूर्व विधायक लाखन सिंह बघेल ने कांग्रेस पार्टी को छोड़ी और भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली है। उन्होंने मध्य प्रदेश के कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी पर निशाना भी साधा है। आइये जानते हैं लाखन सिंह बघेल ने और क्या-क्या कहा है।

लोकसभा चुनाव के दौरान लगातार चंबल अंचल में कांग्रेस नेता पार्टी छोड़ रहे हैं। यही वजह है कि कांग्रेस ग्वालियर-चंबल अंचल में कमजोर दिखाई दे रही है। लाखन सिंह बघेल समाज का एक बड़ा चेहरा माने जाते हैं। उन्होंने देर रात बीजेपी लोकसभा ग्वालियर प्रत्याशी भारत सिंह कुशवाह और मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर ने बीजेपी की सदस्यता दिलाई है। कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए लाखन सिंह ने बताया कि जब से कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी बने हैं, लगातार कार्यकर्ता अपने आप को ठगा महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा कि अब कांग्रेस पार्टी में कार्यकताओं को सम्मान नहीं मिल पा रहा है और मैं भारतीय जनता पार्टी के कार्यों से और बीजेपी की निष्ठा, नीतियों से प्रभावित हूं। उन्होंने कहा जो वर्तमान प्रधानमंत्री योजनाएं लेकर आ रहे हैं, उनसे प्रेरित होकर मैं भाजपा जॉइन कर रहा हूं। लाखन सिंह बघेल को ग्वालियर से लोकसभा बीजेपी प्रत्याशी भारत सिंह कुशवाह और ऊर्जा मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर ने भाजपा की सदस्यता दिलाई। तीनों ने लाखन सिंह का भारतीय जनता पार्टी में स्वागत किया। इसके बाद भारत सिंह कुशवाह ने कहा कि लाखन सिंह के बीजेपी में आने से पार्टी को मजबूती मिलेगी। लाखन सिंह ने अपना राजनीतिक कैरियर बहुजन समाजवादी पार्टी से शुरू किया था। वो सन 2005 से 2008 तक शिवपुरी की करैरा विधानसभा से विधायक रहे जिसके बाद पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता दिलाई थी।

राहुल गांधी की रैली से पहले बड़ी फजीहत, कांग्रेस के पोस्टर पर लगा दी भाजपा उम्मीदवार की फोटो

मंडला। मंडला में राहुल गांधी की रैली से पहले सामने आए एक वीडियो ने कांग्रेस की फजीहत करा दी है। इस वीडियो में कांग्रेस कार्यकर्ता मंच पर लगे फलेक्स से केंद्रीय मंत्री और बीजेपी उम्मीदवार फग्गन सिंह कुलस्ते की तस्वीर छिपाते नजर आ रहे हैं। दरअसल राहुल गांधी आज मंडला लोकसभा क्षेत्र के धनोरा गांव में जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके लिए तैयारियां भी लगभऊग पूरी हो चुकी है। लेकिन इसी दौरान एक बड़ी चूक हो गई है। चुनावी सभा के लिए मंच पर लगाए गए फ्लेक्स में कांग्रेस के अन्य नेताओं के साथ बीजेपी उम्मीदवार फग्गन सिंह कुलस्ते की तस्वीर लगा दी गई। ये वहीं नेता है जिनके खिलाफ राहुल गांधी चुनाव प्रचार करने मंडला पहुंच रहे हैं। हालांकि इसमें उनका नाम नहीं लिखा था। ना ही अन्य किसी कांग्रेस नेता का नाम लिखा।

गलती समझ आने के बाद आनन फानन में कुलस्ते की तस्वीर को छिपाते हुए उसी जगह कांग्रेस विधायक रजनीश हरवंश का पोस्टर लगा दिया गया।

मंडला से कांग्रेस ने इस बार ओमकार सिंह को मौका दिया है। राहुल गांधी की ये रैली ऐसे समय में हो रही है जब एक दिन पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जबलपुर में मेगा रोड शो कर चुनाव प्रचार का आगाज किया था जिसमें हजारों लोग शामिल हुए थे।

रोड शो शाम करीब 6.30 बजे शहीद भगत सिंह चौराहे से शुरू हुआ और शाम करीब 7.15 बजे यहां गोरखपुर इलाके में आदि शंकराचार्य चौराहे पर समाप्त हुआ।

लोकसभा चुनाव की घोषणा के बाद राज्य के अपने पहले दौरे पर आए प्रधानमंत्री मोदी, यादव और अन्य लोगों ने भाजपा का चुनाव चिह्न 'कमल' हाथ में ले रखा था। वे भगवा रंग के वाहन पर सवार होकर रोड शो कर रहे थे। रोड शो के दौरान सड़क के दोनों ओर बड़ी संख्या में लोग कतार में खड़े थे और मोबाइल फोन से तस्वीरें खींचते और वीडियो बनाते देखे गए।

मंडला में, केंद्रीय मंत्री और छह बार के भाजपा सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते का मुकाबला पूर्व मंत्री और डिंडोरी-एसटी से चार बार के कांग्रेस विधायक ओंकार सिंह मरकाम से है। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव चार चरणों में होंगे। पहले चरण का मतदान 19 अप्रैल को होगा, उसके बाद 26 अप्रैल, 7 मई और 13 मई को होगा। मध्य प्रदेश में कुल 29 लोकसभा क्षेत्र हैं, जो इसे संसदीय प्रतिनिधित्व के मामले में छठा सबसे बड़ा राज्य बनाता है। इनमें से 10 सीटें एससी और एसटी उम्मीदवारों के लिए आरक्षित हैं, जबकि बाकी 19 सीटें अनारक्षित हैं।

2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने मध्य प्रदेश में 29 में से 28 सीटें जीतकर प्रचंड जीत हासिल की थी जबकि कांग्रेस केवल एक सीट-छिंदवाड़ा जीतने में कामयाब रही।

राम नवमी पर अयोध्या में होगा रामलला का सूर्य तिलक

अयोध्या। अयोध्या स्थित राम मंदिर 17 अप्रैल को राम नवमी के अवसर पर एक दुर्लभ खगोलीय घटना का गवाह बनने जा रहा है। इस दिन मंदिर आने वाले भक्तों को भी एक दुर्लभ वार्षिक कार्यक्रम का गवाह बनने का मौका मिलेगा।

दरअसल इस दिन सूरज की किरण भगवान राम की मूर्ति पर पड़ेगी और यह नई राम लला की मूर्ति के माथे पर एक दिव्य तिलक लगाएगी। इसे सूर्य तिलक कहा जा रहा है। साथ ही इसे विज्ञान, इंजीनियरिंग और आध्यात्मिकता का मिश्रण बताया जा रहा है।

मंदिर ट्रस्ट के अधिकारियों और इस मकैनिज्म को डिजाइन करने वाले वैज्ञानिकों ने कहा कि यह घटना लेंस और मिरर की खास डिजाइन के माध्यम से घटित होगी। खास बात ये है कि यह चमत्कार केवल राम नवमी के दिन ही होगा। यानी भगवान राम की प्रतिमा पर सूर्य किरण केवल राम नवमी के दिन ही पड़ेगी। इस दिन भगवान काम का जन्मदिवस होता है।

इसी साल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद डॉ सुधांशु त्रिवेदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान सूर्य तिलक को लेकर विस्तार से बताया था।

उन्होंने कहा कि राम मंदिर में एक वैज्ञानिक तथ्य है कि राम मंदिर में भगवान की प्रतिमा पर राम नवमी को सूर्य की किरण सीधे पड़ेगी। यानी राम नवमी को भगवान का सूर्य तिलक होगा। इसके लिए इन्स्टीट्यूट आफ एस्ट्रोफिजिक्स, बेंगलुरू ने गहन खगोलीय अध्ययन और आकलन किया। रुड़की के सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट ने इमारत के बारे में गहन शोध किया और एक कंपनी ने वह अवतल लैंस तैयार किया जिसमें से हो कर सूर्यकिरण भगवान के माथे पर पड़ेंगी।

इसके अलावा, उन्होंने कहा कि कई अन्य प्राचीन मंदिरों में भी इसी तरह का चमत्कार देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि आंध्रप्रदेश के वेद नारायण मंदिर, कोल्हापुर में महालक्ष्मी का मंदिर, कोणार्क का मंदिर, कर्नाटक के श्रृंगेरी के मंदिर में विज्ञान का करिश्मा है कि वहां अलग अलग तिथियों पर सूर्य की किरणें एक सटीक स्थान पर पड़ती हैं।

''बड़े बड़े उपग्रह तो आज सक्रिय हैं, हमारे देश में विज्ञान बरसों बरस से है।''

सूर्य तिलक मकैनिज्म को डिजाइन करने वाली संस्था सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के मुख्य वैज्ञानिक आर धर्मराजू ने एक बयान में कहा कि राम नवमी पर भगवान राम की प्रतिमा के माथे पर सूर्य किरण पड़ेगी। इसके लिए पूरे लेंस मकैनिज्म को खास तरह से डिजाइन किया गया है।

यह रामनवमी पर दोपहर के आसपास शुरू होगा और चार मिनट तक जारी रहेगा। मंदिर निर्माण का कार्य करने वाले एक वैज्ञानिक के मुताबिक हर साल राम नवमीं के दिन रामलला की मूर्ति के माथे पर सूर्य की किरणों से तिलक होगा। इसके लिए राम मंदिर के तीसरी मंजिल से लेकर रामलला की मूर्ति तक पाइपिंग और आप्टो मैकेनिकल सिस्टम से सूर्य की किरणें रामलला की मूर्ति तक पहुंचेंगी।

राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा, भगवान राम सूर्यवंशी थे और इसलिए, हमने सोचा कि उनके जन्मदिन पर सूर्य तिलक के साथ बधाई देने से बेहतर कुछ नहीं हो सकता और इसीलिए यह मकैनिज्म डिजाइन किया गया।

इस तंत्र के माध्यम से, सूर्य की किरणों को भगवान राम के माथे पर डाला जाएगा। जिसके परिणामस्वरूप अंडाकार आकार का तिलक बनेगा। यह सावधानीपूर्वक इंजीनियरिंग और ऑप्टिकल विज्ञान के अनुप्रयोग का एक आदर्श उदाहरण है, जो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच दिव्य संबंध का भी प्रतीक है।

पूर्व विधायक अजब सिंह ने 5 महीने में तीसरी बार बदला पाला

सबलगढ़। सुमावली विधानसभा के पूर्व कांग्रेस विधायक अजब सिंह कुशवाह ने एकबार फिर पाला बदला है। उन्होंने कांग्रेस को छोड़ कर भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली है। सीएम मोहन यादव जब सबलगढ़ विधानसभा के गांव मामचोन में चुनावी जनसभा को संबोधित करने पहुंचे तो मंच पर अजब सिंह कुशवाह को बीजेपी की सदस्यता दिलाई। अजब सिंह कुशवाह कांग्रेस के टिकट पर सुमावली विधानसभा से 2020 के उप चुनाव में विधायक बने थे। बीते साढ़े पांच महीने में यह तीसरी बार है जब अजब सिंह कुशवाह ने पार्टी बदली है।

अजब सिंह कुशवाह ने खूब पार्टियां बदली हैं। अजब सिंह कुशवाह ने अपना राजनीतिक करियर बहुजन समाजवादी पार्टी से शुरू किया था। बाद में उन्होंने कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली थी। फिर बीजेपी में आ गए। बीते

विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी से टिकट कटने के बाद वह बहुजन समाज पार्टी में चले गए थे। हालांकि कांग्रेस पार्टी ने कुलदीप सिकरवार का फाइनल टिकट कटकर अजब सिंह कुशवाह को दे दिया तब वह कांग्रेस से चुनाव लड़े फिर हार का मुंह देखने के बाद अब बीजेपी ज्वाइन कर ली है।

अजब सिंह कुशवाह विधानसभा चुनाव के दौरान लगातार अपने अपराधिक मामलों को लेकर लगातार चर्चाओं में बने हुए थे। अजब सिंह कुशवाह पर विधानसभा चुनाव के कई चेक बाउंस के केस हुए थे। हालांकि उनका कहना है कि अब उनके ऊपर कोई अपराधिक केस नहीं है। वह सभी केसों से बरी हो चुके हैं। उन्होंने किसी के दबाव में भाजपा नहीं ज्वाइन की है। कांग्रेस की राजनीति परिवारवाद की राजनीति रही है। बीजेपी ने चंबल अंचल में काफी विकास किया है।

अजब सिंह कुशवाह ने आगे कहा-मैं प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों से प्रभावित हूं। सभी समाज से निवेदन करूंगा कि अबकी बार मोदी सरकार को वोट करें। बीजेपी प्रत्याशी शिवमंगल सिंह तोमर को लाखों मतों से विजय बनाएं। चर्चाएं हैं कि इस लोकसभा चुनाव में भी अजब सिंह कांग्रेस से टिकट मांग रहे थे। हालांकि कांग्रेस ने इस बार सुमावली से ही पूर्व विधायक रहे सत्यपाल नीटू सिकरवार को टिकट दे दिया। इससे आहत अजब सिंह ने कांग्रेस छोड़ने का फैसला किया। अब वह भाजपा में शामिल हो गए हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यों के प्रति नफरत और हीनभावना से भरा हुआ है कांग्रेस का घोषणा पत्र

लोकसभा चुनाव की अन्य तैयारियों में कांग्रेस भले ही पिछड़ गई हो किंतु 48 पृष्ठों, 10 न्याय, 25 गारंटी के बड़े वादों के साथ उसने अपना चुनावी घोषणापत्र लगभग समय से जारी कर दिया। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा जारी इस घोषणापत्र ने कांग्रेस को पूरी तरह से बेनकाब कर दिया है। विपक्ष के रूप में कांग्रेस का दस वर्ष का कार्यकाल सनातन विरोधी रहा और घोषणापत्र ने पार्टी के सनातन विरोधी होने पर अंतिम मुहर लगा दी । वर्तमान कांग्रेस के नेता मोहब्बत की दुकान खोलते हैं वस्तुतः भगवान राम व सनातन हिंदू समाज के प्रति नफरत से भरे हुए हैं। अदालत में भगवान राम को काल्पनिक कहने वाली पार्टी ने स्वाभाविक रूप से अयोध्या में दिव्य भव्य एवं नव्य राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का बहिष्कार किया और लगातार या तो स्वयं सनातन विरोधी बयानबाजी की या सनातन विरोधियों को मंच और समर्थन दिया। मोहब्बत के नाम पर सनातन के विरुद्ध नफरत का कारोबार करने वाली कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र को न्याय पत्र का नाम दिया है।

कांग्रेस ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लगभग 55 साल तक अकेले शासन किया और वह भी लगभग एक ही परिवार के नेतृत्व में पहले नेहरू फिर इंदिरा। इंदिरा गांधी जी की हत्या के बाद उपजी सहानुभूति के बल पर राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री बने। 2004 से 2014 की कांग्रेस सरकार भी परोक्ष रूप से गांधी परिवार के हाथ में ही थी किंतु यह लोग न तो देश का विकास कर पाए और न ही किसी के साथ न्याय कर पाने में सफल हुए। कांग्रेस का गरीबी हटाओ का नारा एक बहुत बड़ा धोखा साबित हुआ और उसकी आड़ में बड़े-बड़े घोटाले होते गए। बीच में आए वी.पी. सिंह, देवगौड़ा, इंद्र कुमार गुजराल सरीखे नेता भी कांग्रेस के गर्भ से ही निकले हुए और उसी परिपाटी पर चले। आज जब देश को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक सशक्त नेतृत्व मिला है जिनके कार्यकाल में भारत सशक्त हो रहा है और पूरे विश्व में भारत का डंका बज रहा है कांग्रेस निराशा, हताशा व कुंठा से ग्रस्त न्याय पत्र लेकर आई है।

कांग्रेस प्रधानमंत्री मोदी पर तानाशाही का आरोप लगा रही है और बयान दे रही है कि अगर मोदी तीसरी बार 400 सीटों के साथ देश के प्रधानमंत्री बन गए तो भारत में लोकतंत्र समाप्त हो जाएगा, संविधान समाप्त हो जाएगा, आरक्षण समाप्त हो जाएगा जबकि वास्तविकता यह है कि कांग्रेस ने जो घोषणापत्र जारी किया है वह स्वयं ही कठघरे में है और स्पष्ट करता है कि कांग्रेस की नीयत अच्छी नहीं है। कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में जो वादे किए हैं वह भारत व सनातन हिंदू समाज में विभेद बढ़ाने के लिए किए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस के घोषणापत्र पर टिप्पणी करते हुए इसे मुस्लिम लीग की विचारधारा से प्रेरित बताया और जो हिस्सा मुस्लिम लीग से बचा है उसमें वामपंथी हावी हैं। कांग्रेस का घोषणापत्र केवल मुसलमानों का तुष्टिकरण करने वाला और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व उनके द्वारा किए गए सभी कार्यों के प्रति नफरत और हीन भावना से भरा हुआ है। कांग्रेस के घोषणापत्र में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का कोई रोडमैप नहीं है।

कांग्रेस के घोषणापत्र से यह बात भी साफ हो गई ही है अब उसने संविधान निर्माता बाबासाहेब आम्बेडकर, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के विचारों का भी परित्याग कर दिया है। एक समय में, जात पर न पात पर, मोहर लगेगी हाथ पर का नारा देने वाली कांग्रेस सत्ता में आने पर जातिगत जनगणना कराने का वादा कर रही है। कांग्रेस के जातिगत जनगणना और आरक्षण सीमा बढ़ाने के इस मुद्दे की हवा पार्टी के ही नेता आनंद शर्मा ने ही निकाल दी है। कांग्रेस नेता आनंद शर्मा का कहना है कि इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने जातिगत जनगणना के विचार को खारिज कर दिया था।अंग्रेजों के समय में भी जातिगत जनगणना का विरोध किया गया था और उसे राष्ट्रीय हितों के विपरीत माना गया था। आज कांग्रेस वामपंथी विचारधारा से ग्रस्त होकर जातिगत जनगणना की बात कह रही है।

मुस्लिम तुष्टिकरण की चरम सीमा को पार कर रही कांग्रेस अपने घोषणा पत्र में मुस्लिम तुष्टिकरण की चरम सीमा पार कर गई है। यह घोषणापत्र हिंदू समाज को चेतावनी जारी कर रहा है। कांग्रेस के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने एक बार लाल किले से दिए गए अपने भाषण में कहा था, भारत के संसाधनों पर पहला अधिकार अल्पसंख्यकों का है और उसी दिन से कांग्रेस का पतन प्रारम्भ हो गया था। अब कांग्रेस ने एक बार फिर केवल मुस्लिम हितों का ध्यान रखते हुए घोषणापत्र जारी किया है। कांग्रेस का कहना है कि वह भारत में अल्पसंख्यकों के अधिकारों को बनाए रखने और उनकी रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसके साथ कांग्रेस ने मुस्लिम समाज से कुछ ऐसे वादे भी किए हैं जिनसे यह साफ हो गया है कि अब कांग्रेस पर मुस्लिम लीग की पूरी छाया है।

कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 बहाल करने, तीन तलाक बिल रद्द करने, संविधान के अनुच्छेद 15,16, 25, 28, 29 और 30 का जिस प्रकार आदर करने का वादा किया है वह डरावना है। मुस्लिम तुष्टिकरण को व्यापक करने के लिए सुप्रीम कोर्ट में मुसलमान जजों की संख्या में वृद्धि करने सहित सार्वजनिक स्थलों पर हिजाब-बुर्का पहनने और गोमांस खाने की छूट देने का भी वादा किया है। कांग्रेस ने मुसलमान छात्रों के लिए छात्रवृत्ति योजना को बढ़ाने का भी वादा किया है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कांग्रेस जमात-ए- इस्लामी, लश्कर ए तैयबा, अल कायदा की राह पर चलने वाली है। सरकारी और निजी नौकरियों में मुसलमानों के लिए सच्चर कमेटी की रिपोर्ट को लागू करने की बात भी कांग्रेस ने दोहराया है। कांग्रेस के घोषणापत्र से स्पष्ट है कि अगर गलती से भी उसकी सरकार आ गई तो याकूब मेमन को फांसी नहीं होगी और बुरहान बानी जैसे आतंकवादी का एनकाउंटर नहीं हो सकेगा। और तो और हर घर तिरंगा भी नहीं फहरा पाएगा। कांग्रेस के घोषणापत्र में मुसलमानों के खिलाफ किसी प्रकार के भाषणों को रोकने के लिए एक अलग कानून प्रस्तावित है। स्मरण रखना चाहिए कि मनमोहन सिंह के नेतृत्व पिछली कांग्रेस सरकार ने सांप्रदायिक हिंसा से जुड़ा एक कानून लाने का प्रयास किया था जो परोक्ष रूप से हिन्दुओं को नष्ट करने के लिए था कांग्रेस ने अपना वह पापी इरादा फिर जाहिर किया है। कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र के माध्यम से हिंदू समाज व संस्कृति को पूरी तरह से समाप्त करने का बंदोबस्त कर रखा है, उसने वादा किया है कि समलैंगिक विवाह को पूरी तरह से मान्यता दी जाएगी। कांग्रेस ने युवाओं, महिलाओं के साथ जो वादे किए हैं वह केवल झूठ का पुलिंदा भर है क्योंकि उसने इन वादों को पूरा करने का कोई रोडमैप नहीं बताया है। इसके अलावा भारत जोड़ो यात्रा से लेकर न्याय यात्रा तक राहुल गांधी जिन मुद्दों को उठाते रहे हैं उनका भी समावेश इस घोषणापत्र में किया गया है। कांग्रेस ने नोटबंदी, राफेल व इलेक्टोरल बांड की जांच करवाने को भी कहा है जिसमें वह कानूनी दृष्टिकोण से पहले ही विफल हो चुकी है।

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे जनसभा में अनुच्छेद 370 को 371 बताते हुए बोल रहे हैं कि राजस्थान के लोगों को जम्मू-कश्मीर से क्या मतलब? यहीं से भारतीय जनमानस को कांग्रेस से सतर्क हो जाना चाहिए। वर्तमान कांग्रेस केवल उत्तर को दक्षिण से पूर्व को पश्चिम से लड़ा सकती है, वोट बैंक के लालच में सनातन को अपमानित कर सकती है, देश पर लीगी मानसिकता वाले कानून लाद सकती है, भ्रष्टाचार कर सकती है। भारत, भारतीय और भारतीयता से उसका दूर दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। लगता है इस आम चुनाव के परिणाम आने पर इस कांग्रेस का कोई नाम लेवा न बचेगा।

प्रत्याशियों को हर चल संपत्ति की जानकारी देने की जरूरत नहीं-सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों को उनकी हर संपत्ति की जानकारी देना जरूरी नहीं है। कोर्ट ने कहा कि उम्मीदवारों की भी निजता होती है और अगर उनकी कोई संपत्ति का वोटिंग से लेना-देना नहीं है तो इसके बारे में बताना भी जरूरी नहीं है। हालांकि ध्यान रखने की जरूरत है कि वह संपत्ति विलासितापूर्ण ना हो और उसकी कीमत बहुत ज्यादा ना हो। सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला 2019 में अरुणाचल प्रदेश विधानसभा में तेजी सीट से निर्दलीय विधायक कारिखो क्रि के चुनाव को बरकरार रखते हुए सुनाया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि उम्मीदवारों और उनके परिवार के सदस्यों को हर चल संपत्ति का ब्यौरा देने की जरूरत नहीं है जबतक कि वह बहुत कीमती या फिर विलासितापूर्ण ना हो। जस्टिस अनिरुद्ध बोस और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने कहा कि गौहाटी हाई कोर्ट का वह फैसला खारिज कर दिया जिसमें कारिखो क्रि के चुनाव को अमान्य करार दे दिया गया था।

याचिका में कारिखो क्रि के विरोधी ने दावा किया था कि कारिखो क्री ने चुनाव से पहले अपनी पत्नी के तीन वाहनों की जानकारी नहीं दी थी जिससे चुनाव पर अनुचित प्रभाव पड़ा। वहीं कोर्ट ने कहा कि चुनाव से पहले ही ये वाहन या तो गिफ्ट में दे दिए गए थे या फिर बेच दिए गए थे। ऐसे में ये वान अब क्रि के परिवार के स्वामित्व में नहीं हैं। बता दें कि 2019 के विधानसभा चुनाव में कारिखो क्रि तेजू सीट से निर्दलीय विधायक चुने गए थे।

चुनाव परिणाम आने के बाद कांग्रेस प्रत्याशी नुने तायांग ने क्रि के चुनाव को चुनौती देते हुए हाई कोर्ट में याचिका फाइल की थी। उन्होंने तेजू सीट से क्रि के चुनवा को रद्द करने की मांग की थी।

आदिशक्ति की आराधना का पर्व

भारतीय समाज में नवरात्रि पर्व का विशेष महत्व है, जो आदि शक्ति दुर्गा की पूजा का पावन पर्व है। नवरात्रि के नौ दिन देवी दुर्गा के विभिन्न नौ स्वरूपों की उपासना के लिए निर्धारित हैं और इसीलिए नवरात्रि को नौ शक्तियों के मिलन का पर्व भी कहा जाता है। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवरात्रि की शुरुआत होती है और इस बार नवरात्रि पर्व की शुरुआत 09 अप्रैल से हो चुकी है, जिसका समापन रामनवमी के दिन 17 अप्रैल को होगा। प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक चलने वाले नवरात्र नवशक्तियों से युक्त हैं और हर शक्ति का अपना-अपना अलग महत्व है। नवरात्र के प्रथम स्वरूप में मां दुर्गा पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में विराजमान हैं। नंदी नामक वृषभ पर सवार शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का पुष्प है। शैलराज हिमालय की कन्या होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। इन्हें समस्त वन्य जीव-जंतुओं की रक्षक माना जाता है। दुर्गम स्थलों पर स्थित बस्तियों में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना इसीलिए की जाती है कि वह स्थान सुरक्षित रह सके।

मां दुर्गा के दूसरे स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया है। माना जाता है कि इनकी आराधना से अनंत फल की प्राप्ति और तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम जैसे गुणों की वृद्धि होती है। 'ब्रह्मचारिणी' अर्थात् तप की चारिणी यानी तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने दाएं हाथ में अष्टदल की माला और बाएं हाथ में कमंडल लिए सुशोभित है। कहा जाता है कि देवी ब्रह्मचारिणी अपने पूर्व जन्म में पार्वती स्वरूप में थीं। वह भगवान शिव को पाने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर रहीं और 3000 साल तक शिव की तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर की। इसी कड़ी तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

मां दुर्गा का तीसरा स्वरूप है चंद्रघंटा। शक्ति के रूप में विराजमान मां चंद्रघंटा मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्रमा है। देवी का यह तीसरा स्वरूप भक्तों का कल्याण करता है। इन्हें ज्ञान की देवी भी माना गया है। बाघ पर सवार मां चंद्रघंटा के चारों तरफ अद्भुत तेज है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। यह तीन नेत्रों और दस हाथों वाली हैं। इनके दस हाथों में कमल, धनुष-बाण, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा जैसे अस्त्र-शस्त्र हैं। कंठ में सफेद पुष्पों की माला और शीष पर रत्नजड़ित मुकुट विराजमान हैं। यह साधकों को चिरायु, आरोग्य, सुखी और सम्पन्न होने का वरदान देती हैं। कहा जाता है कि यह हर समय दुष्टों का संहार करने के लिए तत्पर रहती हैं और युद्ध से पहले उनके घंटे की आवाज ही राक्षसों को भयभीत करने के लिए काफी होती है। चतुर्थ स्वरूप है कुष्मांडा। देवी कुष्मांडा भक्तों को रोग, शोक और विनाश से मुक्त करके आयु, यश, बल और बुद्धि प्रदान करती हैं। यह बाघ की सवारी करती हुईं अष्टभुजाधारी, मस्तक पर रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट पहने उज्ज्वल स्वरूप वाली दुर्गा हैं। इन्होंने अपने हाथों में कमंडल, कलश, कमल, सुदर्शन चक्र, गदा, धनुष, बाण और अक्षमाला धारण की हैं। अपनी मंद मुस्कान से ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कुष्मांडा पड़ा। कहा जाता है कि जब दुनिया नहीं थी तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार था। ऐसे में देवी ने अपनी हल्की-सी हंसी से ब्रह्मांड की उत्पत्ति की। वह सूरज के घेरे में रहती हैं। सिर्फ उन्हीं के अंदर इतनी शक्ति है, जो सूरज की तपिश को सहन कर सकें। मान्यता है कि वही जीवन की शक्ति प्रदान करती हैं।

दुर्गा का पांचवां स्वरूप है स्कन्दमाता। भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) की माता होने के कारण देवी के इस स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। यह कमल के आसन पर विराजमान हैं, इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है। इन्हें कल्याणकारी शक्ति की अधिष्ठात्री कहा जाता है। यह दोनों हाथों में कमलदल लिए हुए और एक हाथ से अपनी गोद में ब्रह्मस्वरूप सनतकुमार को थामे हुए हैं। स्कन्द माता की गोद में उन्हीं का सूक्ष्म रूप छह सिर वाली देवी का है।

दुर्गा मां का छठा स्वरूप है कात्यायनी। यह दुर्गा देवताओं और ऋषियों के कार्यों को सिद्ध करने लिए महर्षि कात्यायन के आश्रम में प्रकट हुईं। उनकी पुत्री होने के कारण ही इनका नाम कात्यायनी पड़ा। देवी कात्यायनी दानवों व पापियों का नाश करने वाली हैं। वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले दानवों को अपने तेज से ही नष्ट कर देती थीं। यह सिंह पर सवार, चार भुजाओं वाली और सुसज्जित आभा मंडल वाली देवी हैं। इनके बाएं हाथ में कमल और तलवार व दाएं हाथ में स्वस्तिक और आशीर्वाद की मुद्रा है।

मां दुर्गा का सातवां स्वरूप कालरात्रि है, जो देखने में भयानक है लेकिन सदैव शुभ फल देने वाला होता है। इन्हें 'शुभंकारी' भी कहा जाता है। 'कालरात्रि' केवल शत्रु एवं दुष्टों का संहार करती हैं। यह काले रंग-रूप वाली, केशों को फैलाकर रखने वाली और चार भुजाओं वाली दुर्गा हैं। यह वर्ण और वेश में अर्द्धनारीश्वर शिव की तांडव मुद्रा में नजर आती हैं। इनकी आंखों से अग्नि की वर्षा होती है। एक हाथ से शत्रुओं की गर्दन पकड़कर दूसरे हाथ में खड़ग-तलवार से उनका नाश करने वाली कालरात्रि विकट रूप में विराजमान हैं। इनकी सवारी गधा है, जो समस्त जीव-जंतुओं में सबसे अधिक परिश्रमी माना गया है।

नवरात्र के आठवें दिन दुर्गा के आठवें रूप महागौरी की उपासना की जाती है। देवी ने कठिन तपस्या करके गौर वर्ण प्राप्त किया था।

कहा जाता है कि उत्पत्ति के समय आठ वर्ष की आयु की होने के कारण नवरात्र के आठवें दिन इनकी पूजा की जाती है। भक्तों के लिए यह अन्नपूर्णा स्वरूप हैं, इसलिए अष्टमी के दिन कन्याओं के पूजन का विधान है। यह धन, वैभव और सुख-शांति की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका स्वरूप उज्ज्वल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी है। यह एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में डमरू लिए हुए हैं। गायन और संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' सफेद वृषभ यानी बैल पर सवार हैं।

नौवीं शक्ति 'सिद्धिदात्री' सभी सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं, जिनकी उपासना से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

कमल के आसन पर विराजमान देवी हाथों में कमल, शंख, गदा, सुदर्शन चक्र धारण किए हैं। सिद्धिदात्री देवी सरस्वती का भी स्वरूप हैं, जो श्वेत वस्त्रालंकार से युक्त महाज्ञान और मधुर स्वर से भक्तों को सम्मोहित करती हैं।

खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा उज्जैन एवं नागदा के खाद्य प्रतिष्ठानों पर की कार्यवाही

उज्जैन। कलेक्टर श्री नीरज कुमार सिंह के आदेश पर खाद्य सुरक्षा प्रशासन के खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की 02 टीम द्वारा दिनांक 08.04.2024 को खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा उज्जैन शहर के खाद्य प्रतिष्ठानों पर कार्यवाही कर तेजल दूध डेयरी गौतम मार्ग उज्जैन से दूध, दही, पनीर, घी के नमूनें, केपिटल डिस्ट्रीब्यूटर उद्योगपुरी से विभिन्न ब्राण्ड के सॉफ्ट ड्रिंक, कार्बोनेटेड वाटर एवं पानी सहित कुल 13 नमूनें लिये गये। इसी प्रकार खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की टीम द्वारा तहसील नागदा में कार्यवाही कर जनता बेकरी से मैदा एवं आटा के नमूनें, फूडीस ग्लोबल इण्डस्ट्रीज से मसाले का नमूना लिये जाकर जांच हेतु राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे गये। कार्यवाही में खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री पुष्पक कुमार द्विवेदी, श्री महेन्द्र कुमार वर्मा, श्री बी.एस.देवलिया एवं श्री सुभाष खेड़कर शामिल थे।

कलेक्टर, महाकाल मंदिर प्रशासक सहित 5 के खिलाफ न्यायालय की अवहेलना का मामला दर्ज

उज्जैन। 8 दिसंबर 2018 को महाकाल मंदिर के भस्मारती द्वार 4 नंबर गेट के स्थान पर बने कुमुद रंजन त्रिवेदी के मकान तोड़ने और उस पर महाकाल मंदिर प्रशासन द्वारा किये कब्जे को लेकर कलेक्टर, महाकाल मंदिर प्रशासक, उपप्रशासक, नगर निगम कमिश्नर, महाकाल थाना प्रभारी को नोटिस जारी हुए हैं।

दरअसल मामला वर्ष 2018 का है जब कुमुद त्रिवेदी के पुत्र अमित त्रिवेदी पर हत्या का आरोप लगा था। हालांकि इस मामले में वे निर्दोष साबित हुए और न्यायालय ने उन्हें बरी कर दिया लेकिन प्रशासन द्वारा अमित त्रिवेदी के पिता कुमुद रंजन त्रिवेदी का मकान तोड़कर उस पर कब्जा कर लिया। कुमुद त्रिवेदी ने बताया कि मामले में न्यायालय ने 30 दिसंबर 2018 को स्टे दिया जिसमें आदेश दिया कि वादी का कब्जा नहीं हटाया जाए और यथा स्थिति कायम रखें। न्यायालय ने कहा कि बिना वैधानिक कार्यवाही के कुमुद रंजन त्रिवेदी को नहीं हटाया जाए उसके बाद भी प्रशासन द्वारा कब्जा कर लिया जो अब तक महाकाल मंदिर प्रशासन के कब्जे में है। कोर्ट का आदेश है कि यथा स्थिति रखी जाए और मुकुद रंजन त्रिवेदी का कब्जा नहीं हटाया जाए बावजूद इसके कब्जा भी हटा दिया है पहले भी शेड बना लिया और अब फिर पक्का निर्माण किया जा रहा है। इसके पीछे प्रशासन की मंशा है कि कुमुद त्रिवेदी को मुआवजा भी नहीं देना पड़े और प्रशासनिक दादागिरी करते हुए हमेशा के लिए बेदखल कर दिया जाए।

कुमुद रंजन त्रिवेदी ने कोर्ट की अवहेलना का मामला दर्ज करवाया है जिसके बाद कलेक्टर, महाकाल मंदिर प्रशासक, उपप्रशासक, नगर निगम कमिश्नर, महाकाल थाना प्रभारी को नोटिस जारी हुए हैं।

भारतीय कालगणना, पूर्ण वैज्ञानिक है

भारतीय नववर्ष का आरम्भ 09 अप्रैल को हो रहा है। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा शक्य विजय की स्मृति में आरम्भ संवत अपने 2080 वर्ष व्यतीत कर 2081वें वर्ष में प्रवेश करेगा। प्रायः आधुनिक कहलाने वाले अंगरेजीदां लोगों के मध्य यह प्रश्न उठता है कि हमारी भारतीय गणना कितनी सटीक, सही व वैज्ञानिक है? सच यह है कि अंग्रेजी शासन के चलते आज विश्व में मानक बनी ईसवी कालगणना न तो वैज्ञानिक है, न ही काल के वास्तविक समय से मेल खाने वाली। इसका प्रकृति से तो दूर का भी संबंध नहीं है। इस कालगणना का एक मात्र आधार पृथ्वी के सूर्य की परिक्रमा में लगने वाला समय है। किन्तु यह भी इतना अपूर्ण है कि विश्व को प्रायः अपनी घड़ियां आगे-पीछे करते रहनी पड़ती हैं। इसके विपरीत भारतीय कालगणना में सृष्टि के प्रारम्भ से अब तक 100वें भाग का भी अंतर नहीं आया है।

सामान्यतः गणनाकारों द्वारा कालगणना करते समय पृथ्वी के अपनी धुरी पर संचरण की अवधि को दिवस; चंद्रमा के पृथ्वी की परिक्रमा की अवधि को मास तथा; पृथ्वी के सूर्य की परिक्रमा करने की अवधि को वर्ष मान काल के मान निर्धारित किये हैं। किन्तु यह मान काल अनुमान भले ही कर लें, काल का शुद्ध मान ज्ञात करने में सर्वथा असमर्थ हैं। कारण, पृथ्वी की सूर्य की परिक्रमा का काल 365.25 दिवस है। चन्द्रमा की पृथ्वी की परिक्रमा का काल भी 28 से 30 दिवस है। दूसरे पृथ्वी की संगति कर सूर्य की भी परिक्रमा कर रहे चंद्रमा का अपना परिपथ भी समरेखीय नहीं। यही कारण है कि गणनाकारों को इसके परिपथ का विचारण करते समय तिथिवृद्धि या तिथिलोप करते रहना प?ता है। इसके अलावा पृथ्वी के अपने अंश पर 27 अंश झुके होने के कारण यहां भी सदैव दिन-रात समान नहीं रहते।

ऐसे में काल का शुद्ध मान ज्ञात करने के लिए किसी एक पद्धति के स्थान पर भारतीय गणनाकार-सौरगणना, चन्द्रगणना, सप्तर्षि कालमान आदि अनेक पद्धतियों का सहारा लेकर काल का शुद्ध मान निकालते हैं। यह दुरूह तो है, किन्तु है इतना सटीक कि आज तक इसमें निमिष भर का अंतर भी नहीं आया। दूसरी ओर ईसवी कालगणना मूलतः उस जूलियन कलेंडर का परिवर्तित परिवर्धित रूप है जिसे रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने लागू किया था। 45 ई.पू. से लागू हुआ यह कलेंडर आरम्भ में 8 दिन के सप्ताहवाला था। इसमें एक वर्ष 304 दिन का 10 महीनोंवाला था। (चोंकानेवाला तथ्य यह भी कि इस दसमासी कलेंडर के 7वें माह का नाम सेप्टेंबर (सप्तअम्बर), आठवें का ओक्टोबर (अष्टअम्बर), नवें का नवम्बर (नवअम्बर) व दसवें का दिसम्बर (दसअम्बर) नाम था।) जूलियस सीजर ने इसमें अपने नाम से जुलाई तथा सीजर अगस्ट्स के नाम से अगस्त माह से जोड़ इसे 360 दिन का बना दिया।

1582 में कैथोलिक देशों का इस कलेंडर से परिचय होने के बाद अंततः 1739 में इंगलेंड ने स्वीकार किया और 1752 तक ब्रिटिश-अमेरिका आदि ब्रिटिश उपनिवेश में इसे स्वीकारा गया। अनेक विद्धान तो इसमें भी समय का 24 घंटा विभाजन भारतीय होराकाल (ढाई घड़ी का एक होरा माना जाता है) को ही इस कलेंडर में गृहीत हॉवर/ऑवर मानते हैं। इसके विपरीत भारतीय गणनाकार पृथ्वी-सूर्य के परिक्रमा पथ के साथ-साथ पृथ्वी पर सीधा प्रभाव डालने वाले पृथ्वी-चंद्र परिपथ को दृष्टिगत रख, इसे 360 अंश में बांट इसका 27 नक्षत्रों में पुनः विभाजन कर तथा उसमें भी पल-विपल की बारीकियों को ध्यान रखने काल की गणना करते हैं। इस कालगणना को अवैज्ञानिक बताया जाना कालगणना का नहीं विज्ञान का अपमान करने के तुल्य है। लोगों की गलत सोचों के विपरीत भारतीय कालगणना अचूक व अत्यन्त सूक्ष्म रूप से की गयी कालगणना है। इसमें त्रुटि से लेकर प्रलय तक की गणना संभव है। भारतीय कालगणना के लिए प्रयुक्त 'सूर्य सिद्धान्त' में काल के दो रूप बताए गये हैं। पहला अमूर्तकाल तथा दूसरा मूर्तकाल । दोनों कालों की गणना सूर्य सिद्धान्त में वर्णित विभिन्न पद्धतियों द्वारा काल की मूल इकाई त्रुटि से की जाती है जिसका आधुनिक मान 0.324 सेकेंड है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी द्वारा सूर्य की की जाने वाली परिक्रमा की अवधि 365 दिन 15 घटी 31 पल 31 विपल व 24 प्रतिविपल है। इसे 365.25 दिन भी कह सकते हैं। इस परिपथ का विभाजन 27 नक्षत्र, 108 पाद में किया गया है। 9-9 पाद मिलकर 12 राशियां बनाते हैं। इसमें जिस कालखंड में सूर्य जिस राशि में रहता है वहीं उस समय का सौरमास होता है।

भारतीय कालगणना केवल सौर परिपथ की गणना कर ही संतुष्ट नहीं होती। वह चंद्रमा के पृथ्वी की परिक्रमा में लगनेवाले समय की भी गणना करता है। यह गणना भी सौरगणना की भांति 27 नक्षत्र, 108 पाद व 12 राशिचक्र में होती है। चंद्रवर्ष सौरवर्ष से 11 दिन 3 घटी 48 पल छोटा होता है। सौर गणना तथा चंद्र गणना में सामंजय बनाने के लिए 32 माह 16 दिन 4 घटी बाद एक चंद्रमास की वृद्धि की जाती है। यह अधिक मास कहलाता है। कालगणना में यह वृद्धि अकारण या सौरगणना से संगति बिठाने हेतु यूं ही नहीं की जातीं। वरन यह भी नक्षत्र संचरण के अनुसार होती हैं। इसके अलावा एक तीसरी गणना सप्तर्षि संवत् नाम से भी प्रचलित है। इसमें सप्तर्षि कहे जानेवाले नक्षत्रों के परिभ्रमण पथ के आधार पर गणना की जाती है। इसके अनुसार 27 नक्षत्रों के परिभ्रमण पथ पर सप्तर्षि प्रत्येक नक्षत्र पर 100-100 वर्ष रहकर 2700 सौरवर्ष (2718 चंद्रवर्ष) में एक परिभ्रमण चक्र पूरा करते हैं।

भारतीय पंचाग-तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण इन पांच अंगों का विवेचन करने के कारण कालगणना की इस विधा को पंचांग कहा जाता है। इनमें सूर्य व चन्द्र के मध्य का परिक्रमा मार्ग को 360 अंशों में विभाजित कर इसमें अमावस्या के अन्त पर सूर्य व चन्द्र को एक समान राशि अंश पर होने पर शीघ्र गतिमान चन्द्र से सूर्य का 12 अंशों का क्रमिक अंतर होने पर प्रतिपदा, 12 से 24 अंश के अंतर पर द्वितीया, 24-36 अंश के अंतर पर तृतीया...होते-होते 168 से 180 अंशान्तर पर पूर्णिमा को माना जाता है। पूर्णिमा के पश्चात गणना उलट जाती है। तब 180 से 168 अंश पर प्रतिपदा, 168-156 अंश के मध्य द्वितीया... आदि के बाद 12 से 0 अंशांतर पर अमावस्या होती है।

दूसरे, 12 बजे आधी रात को होने वाले अंग्रेजी तिथि परिवर्तन के विपरीत भारतीय पद्वति में सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के मध्य का काल एक तिथि काल (पंचांग की भाषा में वार) माना जाता है। पीएन ओक सरीखे विद्वान तो अंगरेजों की आधी रात को तिथि परिवर्तन करने की परिपाटी को भी भारतीय गणना पद्वति का अनुकरण मानते हैं। आकाश को 360 अंशों में मान, भचक्र को 27 भागों में बांट, 13 अंश 20 कला अर्थात 800 कला का एक क्षेत्र एक नक्षत्र का क्षेत्र माना जाता है। अश्विनी से रेवती नक्षत्र तक 27 नक्षत्रों में बांटे गये इस चक्र में चंद्र जब जिस दिन व समय को जिस भाग में गति कर रहा होता है, वह उस नक्षत्र का काल होता है। गणना की बारीकी के लिए नक्षत्र को भी 4 चरणों में विभाजित किया गया है। एक चरण 3 अंश 20 कला का माना जाता है।

योग सूर्य व चंद्र गति में 13 अंश 20 कला का अंतर होने की स्थिति का नाम है। इसे कलांश भी कहा जाता है। यह भी नक्षत्र की भांति 27 हैं। जबकि तिथि का आधा भाग करण कहा जाता है। इन पांचों की गणना के उपरान्त आप स्वयं ही विचार कर सकते हैं कि भारतीय गणना कितनी वैज्ञानिक है। हां, विशुद्ध गणना करने के कारण थोड़ा जटिल अवश्य है। और संभवतः यही कारण है कि हम काल की जटिलता में पड़ा बिना एक सरल पद्धति का सहारा लिए हुए हैं। भले ही वह कितनी ही अवैज्ञनिक, कितनी ही अमानक क्यों न हो।

इस सृष्टि का प्रारम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ माना जाता है। दूसरे शब्दों में कहें कि गणनाकारों ने सृष्टि के आरम्भ की तिथि का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार से मान अपनी गणना की है। इस दिवस के प्रथम होरा का नामकरण राशि स्वामी सूर्य के नाम पर जबकि द्वितीय होरा का नामकरण राशि स्वामी चन्द्र के नाम पर कर दिवसों के नामकरण किये गये हैं। यही दिवसों के अन्य नामकरण (यथा-मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व शनि) का भी आधार हैं। ईसवी सन् के दिवसों के संडे, मंडे आदि नाम अथवा विश्व के अन्य कलेंडरों में दिवसों के नाम भी भारतीय नामों की नकल (अनुकरण) मात्र हैं।

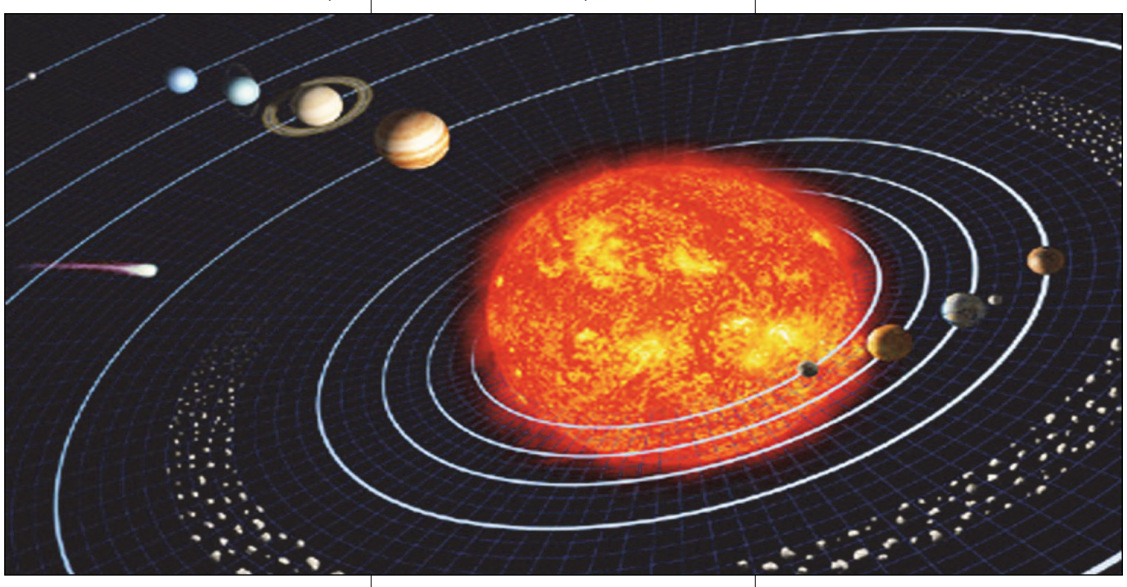

पांच हजार रुपये की रिश्वत लेते प्रधान अध्यापक को गिरफ्तार किया

देवास। लोकायुक्त पुलिस की टीम ने सोमवार को देवास जिले में सरकार स्कूल के प्रधान अध्यापक को पांच हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

आरोपित प्रधान अध्यापक द्वारा महिला शिक्षक को झूठी जांच में फंसाने की धमकी देकर रिश्वत मांग रहा था। लोकायुक्त की इस कार्रवाई से पूरे शिक्षा विभाग में हड़कंप मच गया है। जानकारी के अनुसार, शासकीय प्राथमिक विद्यालय संजय नगर देवास की सहायक अध्यापिका पद्मा बाथम ने लोकायुक्त को शिकायत की गई थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि शासकीय प्राथमिक विद्यालय संजय नगर देवास से विद्यालय के प्रधान अध्यापक तिलकराज सेम द्वारा झूठी जांच में फंसाने की धमकी देकर छह हजार रुपये प्रतिमाह रिश्वत की मांग की जा रही थी। शिक्षिका द्वारा चार अप्रैल को पुलिस अधीक्षक, लोकायुक्त उज्जैन को शिकायत की गई। शिकायत के बाद रिश्वत की पुष्टि के लिए शिक्षिका और प्राचार्य की बातचीत की रिकॉर्डिंग कराई गई। रिकॉर्डिंग में शिक्षिका के निवेदन पर प्रधान अध्यापक ने पांच हजार रुपये हर माह लेने पर सहमति जताई। वेतन मिलते ही शिक्षिका प्रधान अध्यापक को देने के लिए पांच हजार रुपये लेकर पहुंची। पीछे से लोकायुक्त की टीम भी अलर्ट थी। जैसे ही शिक्षिका ने तिलकराज सेम को पांच हजार रुपये दिए लोकायुक्त की टीम पहुंची और रंगेहाथ तिलकराज को दबोच लिया। लोकायुक्त पुलिस प्रधान अध्यापक से पूछताछ कर रही है।

5 लाख दीपों से होगा माँ क्षिप्रा के घाटों का श्रृंगार

उज्जैन। 9 अप्रेल को गुड़ी पड़वा पर्व एवं उज्जैन गौरव दिवस के साथ ही विक्रमोत्सव का समापन किया जाना है। इस अवसर पर नगर पालिक निगम उज्जैन द्वारा हर घर दीपक संकल्प अभियान अन्तर्गत क्षिप्रा के चारों घाट रामघाट, नृसिंह घाट, दत्त अखड़ा एवं गुरूनानक घाट पर 5 लाख दीपक प्रज्जवलित किये जाएंगे। आयुक्त श्री आशीष पाठक के निर्देश एवं मार्गदशन में सम्पूर्ण निगम एवं स्मार्ट सिटी का अमला विगत कई महिनों से शिवज्योति अर्पण कार्यक्रम हेतु पूर्ण समर्पण भाव के साथ लगा हुआ है। क्षिप्रा के चारो घाटों पर समस्त आवश्यक व्यवस्था, पेयजल, प्रकाश, छाया इत्यादि पूर्ण कर ली गई है, घाटों पर दीये लगने का कार्य भी पूर्णता की ओर है।

आयुक्त श्री आशीष पाठक द्वारा बताया गया कि दीपोत्सव की समस्त तैयारियों पूर्ण की जा चुकी है। दीप प्रज्जवलित करने हेतु आने वाले संगठन/संस्था के 8000 से अधिक स्वयं सेवकों को सेक्टर वार आई डी कार्ड जारी किये जा चुके है, तथा घाटों पर उनके बैठक हेतु कैनोपी तथा कुर्सी की व्यवस्था के साथ ही पेयजल व्यवस्था हेतु अस्थाई नल कलेक्शन एवं आर ओ वाटर कैन की व्यवस्था की गई है, घाटों पर दीपकों को जमाए जाने का कार्य तीर्वता से जारी है जिसे रात तक पूर्ण कर लिया जाएगा, सम्पूर्ण घाटों पर विशेष कर राणौजी की छत्री में आर्कषक विद्युत सज्जा की गई है।

आपने बताया कि दीपोत्सव को सायं 6 बजे आयोजित किया जाएगा इस हेतु समस्त स्वयं सेवकों को 4 बजे घाटों पर आमंत्रित किया गया है तथा 7.30 बजे तक उक्त आयोजन को पूर्ण कर विक्रमोत्सव अन्तर्गत सुप्रसिद्ध गायक जुबिन नौटियाल द्वारा छोटी रपट पर बने सेंटर मंच से संगीत की प्रस्तुती दी जाएगी। दीपोत्सव कार्यक्रम के माध्यम से मतदाता जागरूकता अभियान अन्तर्गत अधिक से अधिक मतदान किये जाने की अपील भी की जाएगी।

आपने बताया कि सम्पूर्ण आयोजन को जीरो वेस्ट इवेंट के रूप में आयोजित किया जा रहा है इस जिसके अन्तर्गत उन्हें सामग्री का उपयोग किया जाएगा जिन्हे पूनः उपयोग में लाया जा सके। कार्यक्रम में उपयोग की जा रही सामग्री दीपक, रूई, तेल, बोतल इत्यादि का पुनः उपयोग किया जा सकेगा साथ ही साज सज्जा, ब्रांडिंग इत्यादि में उपयोग की गई सामगी भी पूर्णतः जीरो वेस्ट सामग्री है। निगम द्वारा चारों घाटों को चार सेटरों ए, बी, सी एवं डी सेक्टरों में विभाजित किया गया जाकर चारों सेक्टरों में पीएचई विभाग द्वारा अस्थाई नल कनेक्शन किये जाने के साथ ही साथ आर.ओ. वाटर कैन की व्यवस्था भी की जाएगी, जनसम्पर्क विभाग द्वारा चारो सेक्टरों में दीप प्रज्जवलित करने हेतु आने वाले स्वयं सेवकों हेतु छाया एवं बैठक की व्यवस्था की गई है

इसके साथ ही सम्पूर्ण सेक्टरों में अनाउंसमेंट हेतु पीए सिस्टम, राणौजी की छत्री पर सांस्कृति कार्यक्रम हेतु मंच, चारों सेक्टरों में मेडिकल टीम हेतु बैठक व्यवस्था, दीप जमाने हेतु जाए स्वयं सेवकों हेतु स्वल्पाहार व्यवस्था की गई, प्रकाश विभाग द्वारा सम्पूर्ण घाट एवं राणौजी की छत्री पर आर्कषक विद्युत सज्जा की गई है। साथ ही पहुंच मार्गो पर भी पथ प्रकाश व्यवस्था की गई है।

दीपोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्थाएं में अपर आयुक्त श्री आर.एस. मण्डलोई, श्री दिनेश चौऋषिया, उपायुक्त श्री मनोज मोर्य, श्रीमती कृतिका भीमावत, श्री पी.के. सुमन, श्रीमती आरती खेड़ेकर, सहायक आयुक्त श्रीमती पुजी गोयल, श्री प्रदीप सेन, कार्यपालन यंत्री श्री पीयुष भार्ग झोनल अधिकारी श्री डीएस परिहार, श्री मनोज राजवानी, श्री साहिल मैदावाल, श्री राजकुमार राठौर सहित उपयंत्रीगण एवं अन्य कर्मचारी घाटों पर लगे हुए है।

सोमवती अमावस्या पर शिप्रा नदी व सोमकुंड में स्नान के लिए उमड़े श्रद्धालु

उज्जैन। चैत्र मास की सोमवती अमावस्या पर मोक्षदायिनी शिप्रा व सोमतीर्थ स्थित सोमकुंड में पर्व स्नान के लिए श्रद्धालु उमड़ रहे हैं। देशभर से आए श्रद्धालु शिप्रा नदी में पर्व स्नान कर तीर्थ पर दान पुण्य तथा पितृ कर्म कर रहे हैं। ज्योतिर्लिंग महाकाल सहित शहर के अन्य मंदिरों में भी दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं।

शिप्रा व सोमकुंड में स्नान के लिए देशभर से श्रद्धालुओं का उज्जैन पहुंचने का सिलसिला रविवार शाम से शुरू हो गया था। दर्शनार्थी बस ट्रेन तथा अन्य लोक परिवहन के साधनों से उज्जैन पहुंच रहे हैं। सोमवार सुबह से स्नान का सिलसिला शुरू हुआ जो देर शाम तक चलता रहेगा।

प्रशासन ने चैत्र मास में सोमवती के संजोग में आए भूतड़ी अमावस्या महापर्व पर स्नान के लिए शिप्रा और सोमकुंड पर व्यापक इंतजाम किए हैं। शिप्रा नदी में नर्मदा का शुद्ध जल प्रवाहित किया गया है।

वहीं, सोमकुंड में शुद्ध जल की आपूर्ति कर इसके किनारो पर फव्वारे लगाए गए हैं। देशभर से आने वाले श्रद्धालु फव्वारों में स्नान कर पुण्य अर्जित कर रहे हैं। भूतड़ी अमावस्या पर प्रेत बाधा से निवृत्ति के लिए केडी पैलेस स्थित 52 कुंड में स्नान का महत्व है। बाधा से पीड़ित लोग बड़ी संख्या में यहां स्नान करने आएंगे।

सोमवती अमावस्या पर सोमतीर्थ स्थित सोमकुंड में स्नान तथा इसके उपरांत श्री सोमेश्वर महादेव के दर्शन व पूजन का विधान है।

मान्यता है इससे मनुष्य के जन्म पत्रिका में मौजूद चंद्रमा के दोष समाप्त होते हैं साथ ही अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

कालियादेह महल स्थित बावन कुंड पर व मंगलवार को दीपोत्सव पर्व पर रामघाट और दत्त अखाड़ा घाट पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे हैं। इस दौरान जलजनित दुर्घटनाओं से श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए होमगार्ड व एसडीईआरएफ के 140 अधिकारी/कर्मचारी व तैराक मय उपकरणों के तैनात हैं।

जिला सेनानी संतोष कुमार जाट ने पर्व से पूर्व ही अधिकारी/कर्मचारी एवं जवानों की बैठक लेकर पर्व को सुरक्षित बनाने हेतु दिशा-निर्देश दिए थे। घाटों पर लाइफबाय द्वारा बैरिकेडिंग की गई है, जिससे कोई श्रद्धालु गहरे पानी में ना जा सके एवं बाहर से आए श्रद्धालु सुरक्षित क्षेत्र में ही स्नान कर सकें।

रामघाट पर चार मोटरबोट मय आपदा प्रबंधन सामग्री के लगाई गई है। मोटरबोट के माध्यम से सतत पेट्रोलिंग कर पर्व को सुरक्षित बनाए जाने की पूर्ण तैयारियां की गई है।

अन्य घाटों पर भी जवानों को लाइफबाय एवं लाइफ जैकेट व अन्य आपदा सामग्रियों के साथ तैनात किया गया है। दीपोत्सव पर पूरे रामघाट पर लाखों की संख्या में दीप प्रज्वलित किए जाएंगे।

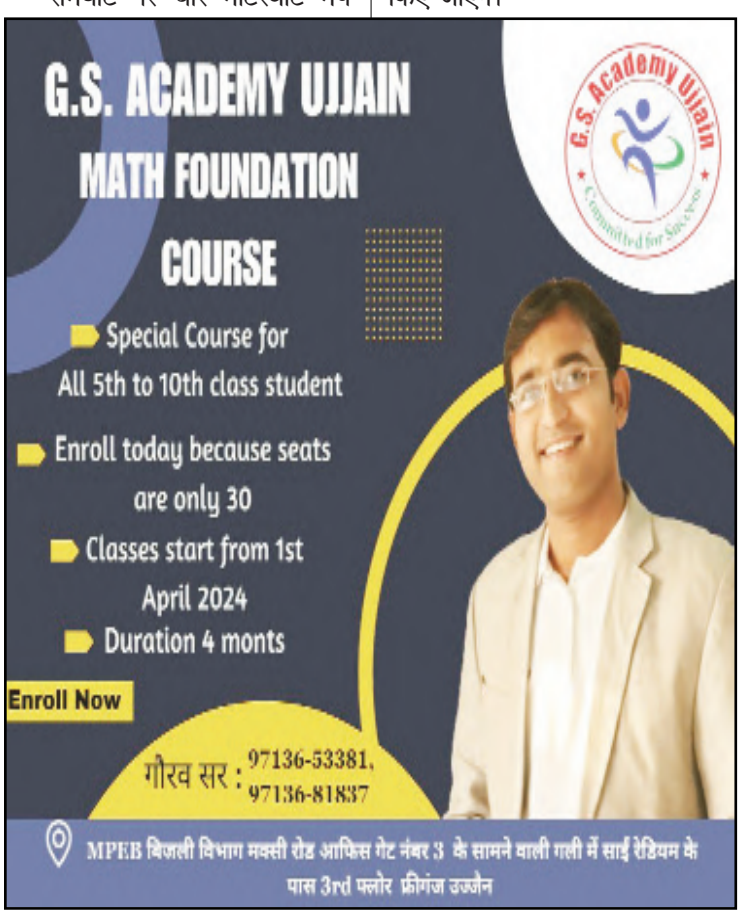

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नक्षत्र के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।
● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)